

Q.3. जीवन काल दृष्टिकोण (Life Span Perspective) की प्रकृति क्या है? इसका मुख्य विशेषताओं और सिद्धांतों पर प्रकाश डालें।

(What is the nature of the Life Span Perspective? Discuss its main characteristics and principles in detail.)

Ans. जीवन काल दृष्टिकोण (Life Span Perspective) मानव विकास के अध्ययन का एक व्यापक दृष्टिकोण है जो यह मानता है कि विकास एक जीवन भर चलनेवाली प्रक्रिया है। यह दृष्टिकोण व्यक्ति के विकास को विभिन्न चरणों और आयामों में देखता है, जिससे संपूर्ण जीवन के अनुभवों और परिवर्तनों की समझ प्राप्त होती है। इस दृष्टिकोण की प्रकृति और इसकी मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :

1. **जीवनभर की प्रक्रिया (Lifelong Process)** : जीवन काल दृष्टिकोण यह मानता है कि विकास केवल बचपन या किशोरावस्था तक सीमित नहीं होता, बल्कि यह जीवनभर जारी रहता है। प्रत्येक जीवन-चरण में विकास होता है और व्यक्ति के अनुभवों और परिवर्तनों का संचय होता रहता है। उदाहरण के लिए, वयस्कता में व्यक्ति नए कौशल और ज्ञान अर्जित करता है, जबकि वृद्धावस्था में अनुभव और परिपक्वता बढ़ती है।

2. **बहुआयामी विकास (Multidimensional Development)** : यह दृष्टिकोण विकास को बहुआयामी मानता है, जिसमें जैविक, संज्ञानात्मक और सामाजिक-भावनात्मक आयाम शामिल होते हैं। ये आयाम एक-दूसरे से जुड़े होते हैं और मिलकर व्यक्ति के समग्र विकास को आकार देते हैं। उदाहरण के लिए, शारीरिक विकास का प्रभाव संज्ञानात्मक क्षमताओं पर पड़ सकता है और सामाजिक संबंध भावनात्मक विकास को प्रभावित कर सकते हैं।
 3. **बहुदिशात्मक विकास (Multidirectional Development)** : विकास की दिशा समय के साथ बदल सकती है। कुछ क्षमताएँ और कौशल उम्र के साथ सुधर सकते हैं, जबकि कुछ में कमी आ सकती है। उदाहरण के लिए, किशोरावस्था में सीखने की क्षमता अधिक होती है, जबकि वृद्धावस्था में शारीरिक क्षमताएँ घट सकती हैं।
 4. **प्लास्टिसिटी (Plasticity)** : विकास की प्रक्रिया लचीली होती है और व्यक्ति के अनुभवों और वातावरण के अनुसार बदल सकती है। यह लचीलापन व्यक्ति को नई चुनौतियों का सामना करने और नई स्थितियों के अनुसार खुद को ढालने की क्षमता प्रदान करता है। उदाहरण के लिए, जीवन के किसी भी चरण में नए कौशल सीखे जा सकते हैं या पुराने कौशल में सुधार किया जा सकता है।
 5. **बहुसंदर्भीय विकास (Multicontextual Development)** : व्यक्ति का विकास कई संदर्भों में होता है, जैसे परिवार, विद्यालय, कार्यस्थल और समाज। इन संदर्भों के बीच परस्पर-क्रिया व्यक्ति के विकास को प्रभावित करती है। उदाहरण के लिए, एक सहायक पारिवारिक वातावरण व्यक्ति के भावनात्मक और सामाजिक विकास को बढ़ावा दे सकता है।
 6. **बहुविषयक दृष्टिकोण (Multidisciplinary Perspective)** : जीवन काल दृष्टिकोण में विभिन्न विज्ञानों और अनुशासनों का समावेश होता है, जैसे मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, मानवविज्ञान और जीवविज्ञान। यह दृष्टिकोण विकास की व्यापक समझ प्रदान करता है और विभिन्न दृष्टिकोणों से विकास का अध्ययन करता है। उदाहरण के लिए, मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से संज्ञानात्मक विकास का अध्ययन किया जा सकता है, जबकि समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से सामाजिक विकास का।
 7. **ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ (Historical and Cultural Context)** : विकास को समझने के लिए ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ महत्वपूर्ण होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति का विकास उनके समाज, संस्कृति और समय की परिस्थितियों से प्रभावित होता है। उदाहरण के लिए, एक समाज में सामाजिक नियम और मूल्यों का प्रभाव व्यक्ति के विकास पर पड़ता है, जबकि दूसरे समाज में वे अलग हो सकते हैं।
- जीवन काल दृष्टिकोण का महत्व** : जीवन काल दृष्टिकोण का महत्व इस बात में है कि यह विकास को एक समग्र प्रक्रिया के रूप में देखता है। यह दृष्टिकोण व्यक्तिगत विकास की सभी अवस्थाओं और उनके परस्पर संबंधों को समझने में मदद करता है। इसका महत्व निम्नलिखित है :

1. **व्यक्तिगत विकास की व्यापक समझ** : यह दृष्टिकोण जीवन के विभिन्न चरणों में विकास के विभिन्न पहलुओं को समझने में मदद करता है, जिससे व्यक्ति के समग्र विकास की समझ प्राप्त होती है।
2. **प्रभावी हस्तक्षेप और नीतियाँ** : जीवन के विभिन्न चरणों में विकासात्मक चुनौतियों और अवसरों को समझकर नीतियों और हस्तक्षेपों को बेहतर तरीके से डिजाइन किया जा सकता है, जो व्यक्तिगत और सामाजिक विकास को बढ़ावा देने में सहायक हो सकते हैं।
3. **लचीलापन और अनुकूलन** : यह दृष्टिकोण यह मानता है कि विकास एक लचीली प्रक्रिया

है और विभिन्न अनुभवों और परिस्थितियों के अनुसार बदल सकता है। इससे व्यक्ति को नई चुनौतियों का सामना करने और नए कौशल सीखने की प्रेरणा मिलती है।

4. सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भ का महत्त्व : जीवन काल दृष्टिकोण यह मानता है कि व्यक्ति का विकास सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भ से प्रभावित होता है। इससे विभिन्न सांस्कृतिक और सामाजिक संदर्भों में विकास की विविधताओं को समझने में मदद मिलती है।

निष्कर्ष : जीवन काल दृष्टिकोण मानव विकास को एक निरंतर और बहुआयामी प्रक्रिया के रूप में देखता है। इसके मुख्य सिद्धांत और महत्त्व व्यक्ति के समग्र विकास की गहन समझ प्रदान करते हैं, जो न केवल व्यक्तिगत विकास को समझने में मदद करते हैं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों में भी विकास की प्रक्रिया को स्पष्ट करते हैं। इस दृष्टिकोण से यह स्पष्ट होता है कि मानव विकास एक जटिल और लचीली प्रक्रिया है जो जीवनभर चलती रहती है और विभिन्न संदर्भों और अनुभवों से प्रभावित होती है।